हृदय ज्ञान
कब स्वर्ग पृथ्वी पर आया
Email : info@wisdomfortheheart.in | Web : www.wisdomfortheheart.in

व्याकुल हृदयों की चंगाई

भाग - ३

यूहन्ना - १४:१३-१५, १६:२३-२८

परिचय

मैंने पढ़ा है कि एस औसत जीवन काल में एक व्यक्ति पाँच साल कतार में खडे होकर गुजारता है, तीन वर्ष सभाओं में, उन्नीस वर्ष सो कर छः वर्ष खाते हुए, सात वर्ष स्नान घर में, दो वर्ष उनसे बातें करने में जो घर में नहीं होते हैं । और पाँच महीने प्रार्थना करने में । वास्तव में आपके सम्पूर्ण जीवन काल में आपसे अपनी रविवार की पाठशाला की कोई भी कक्षा छूटी नहीं है तो आप केवल पाँच महीने कलीसिया में बित रहे होते हैं ।

पाँच साल कतार में प्रतीक्षा - पाँच महीने परमेश्वर में प्रतीक्षा । हालांकि यह किसी का भी दोष नहीं होगा कि आप को कतार में कई वर्ष गुजारने पडे । क्या इसमें आश्चर्य है कि हम क्यों कुण्ठित, पीडित, और व्याकुल हृदय वाले हो सकते हैं ?

आप जानते हैं, जैसा कि हमने यूहन्ना, अध्याय १३ और वचन १४ का अध्ययन किया था कि चेलों के हृदय भी कुण्ठित, पीडित और भयभीत हैं । यीशु ने उसी समय उन्हें सूचना दी थी कि एक विश्वासघाती उनके बीच है, उनका शेर दिल पतरस मुर्गी की बांग पर पलट कर भाग जाएगा , और यह कि उनका अपने शिक्षक और निकटतम मित्र, उन्हे अकेला छोड़ कर जाने वाले हैं ।

इस बिन्दु से ही सुसमाचार का लेखा और कुछ नहीं बाल्कि तीव्र आग भयक्रान्त से प्रश्न और शान्त, मृदु कोमल, रोमाँचकारी उत्तर हैं । अब तक हमने अध्ययन किया सुसमाचार के लेखों में, पतरस का प्रश्न पूछना, "हे प्रभु, तू कहाँ जाता है ?"

यीशु ने उत्तर दिया, "मेरे पिता के घर, और मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जाता हूँ ।"

तब योमा ने पूछा, "हे प्रभु । हम मार्ग केसे जानें ?" यीशु ने कहा, "तुम्हे मार्ग के नक्शे की आवश्यकता नहीं पड़ेगी, केवल मेरे पीछे हो लो - मैं ही नक्शा हूँ ।"

अब फिलिप्पुस की बारी थी बाकी लोगों की तरह अपना हाथ उठाकर प्रश्न पूछने की और उसे गम्भीर उतर मिलेगा ।

हम आज अपने अध्ययन को प्रारम्भ करेंगें, यूहन्ना सुसमाचार के अध्याय १४ वचन हमें फिलिप्पुस हाथ उठाता है और प्रश्न पूछता है या अक्षरश : अपनी विनती रखता है । फिलिप्पुस ने उससे कहा, "हे प्रभु, पिता को हमें दिखा दे, वही हमारे लिए बहुत है ।"

आप उसके प्रश्न का सारांश इस प्रकाट बता सकते हैं, "प्रभु आप ने कहा आप कहीं जो रहे हैं, जहाँ हम कभी नहीं गए, और कभी नहीं देखा । फिर आप हमसे कहते हैं कि हमें किसी दिशानिर्देश का आवश्यकता नहीं होगी - हमें सिर्फ आपका अनुसरण करना होगा - लेकिन अभी आपने बताया कि जा रहे हैं - देखें प्रभु क्या आप हमे ऐसा कुछ मूर्त (जिसे छुआ या देखा जा सके) दे सकते हैं जिस पर हम अपना विश्वास रख सकें । हमें केवल पिता का दर्शन करवाइये हम तृप्त हो पाएँगे । क्या यह ठीक नहीं होगा साथियों ?"

और बाकी सब साथियों ने हो सकता है हाँ मे हाँ मिलायी होगी - "हाँ प्रभु यह बड़ा जबर्दस्त होगा । पिता का हमे दर्शन करना कैसा रहेगा ।"

मुझे विश्वास है कि यीशु ने कोमल लेकिन स्थिर, नुकीले पर दयापूर्ण स्वर में फिलिप्पुस के प्रश्न का उत्तर दिया होगा । देखें वचन ९ से १० अ तक ।

'' हे फिलिप्पुस, मैं इतने दिन से तुम्हारे साथ हूँ, और क्या तू मुझे नहीं जानता ?

जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है । तू क्यों कहता कि पिता को हमें

देखा ? क्या तू विश्वास नहीं करता कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझमें है ।''

वैसे तो किसी अन्य अनुच्छेद ने इतनी दृढ़ता से यीशु को ईश्वर घोषित नहीं किया जितना कि इस अनुच्छेद ने । यीशु कहते हैं, ''क्या तुम्हे पिता को देखता है ? तुम उसे देख रहे हो । क्या तुम परमेश्वर को देखना चाहते हो ? चेहरे में देखो ।

अब वचन १० से ११ तक देखें ।

ये बातें जो मैं तुमसे कहता हूँ, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझमें रह कर अपने काम करता है । मेरा विश्वास करो कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है, नहीं तो कामों ही के कारण मेरा विश्वास करो ।

यीशु कहते हैं ''जब तुम मुझे बोलते हुए सुनते हो, तो वे प्रभु के शब्द हैं । जब तुम मुझे कार्य करते देखते हो, तो वो कार्य प्रभु के हैं । ''

..... और अधिक प्रश्न और उत्तर ...

आज मैं जो करना चाहता है वह है १२ प्रश्नों को पूछना और उतर देना ।

प्रश्न १. यशु ने फिलिप्पुस को ऐसे कौन से मूर्त चीजों का स्मरण दिलाया कि वह उसके हृदय को अश्वस्त कर सका ?

हाँ आपको अपने बाइबल में गोल चिन्ह बना कर रखना होगा । उन दो विषयों पर जिन्हें हमने अभी पढ़ा है कि यीशु ने उन्हें मूर्त कहकर इंगित किया और जो हमारे और उसके हृदय को अश्वस्त कर पाएँगे । पहला वचन १० ब में है,

..... जो बातें मैं तुमसे कहता हूँ .....

और दूसरा ११ ब में है,

..... नहीं तो कामों के ही कारण मेरा विश्वास करो .....

यही वे मूर्त काँटा हैं जिनपर तुम अपने विश्वास का कवच टाँग सको ।

हमें स्वर्ग में अपने भावी निवास का आश्वासन प्राप्त है । और स्वर्ग का मार्ग यीशु के वचन और कार्यों से होकर जाता है ।

यूहन्ना, बाद में यूहन्ना की पहली पत्री अध्याय ५ वचन १३ में लिखेंगें ।

मैंने तुम्हे ..... इसलिए लिखा है कि तुम जानो कि अनन्त जीवन तुम्हारा है । ''ताकि तुम जान सको,'' या अश्वस्त हो जाओ - केवल आशा न करो, या सोचो, या अनुमान लगाओ - बस जान लो । लेकिन कई मसीही उस ''जानने'' के बीच के सम्बन्ध को अनदेखा कर देते हैं ।

वचन के पहले भाग के साथ ''मैंने तुम्हे ..... इसलिए लिखा है कि तुम जान सको ....'' यीशु के वचन और कार्यों के लेखों के पढ़ने से ही हमें आश्वासन प्राप्त होता है । अन्य शब्दों में यीशु मे फिलिप्पुस को जिनका पुर्नश्वासन दिलाना चाहा वे वही हैं जिनसे आपको और मुझे यीशु के वचन और कार्यों में प्रवेश प्राप्त होता है

प्रश्न -२: यीशु के चेले होने के नाते क्या हम उससे महान अद्‌भुत कार्य कर सकते हैं जो उसने किया ? वचन १२ का पहला भाग देखें ।

मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जो मुझ पर विश्वास करता है, ये जो काम

मैं करता हूँ वह भी करेगा, वरन, इनसे भी बडे काम करेगा, क्यों कि मैं पिता के पास जाता हूँ ।

वाह । क्या मैं आशा कर सकता हूँ कि मैं वो कर सकता हूँ जो यीशु ने किया ? क्या मैं अन्धे के देखने और लंगडे के चलने का कारण बन सकता हूँ ? क्या मैं जल पर चल सकता हूँ और रोटी के छोटे से टुकडे कर और मछली को पाँच हजार लोगों का भौजन बना सकता हूँ । ठीक ! उसने यही कहा । अब मुझे ध्यान से सुनिये । जहाँ मैं यह विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर आज भी अद्‌भुत कार्य कर रहे हैं असंख्यक तरह की मार्गो मैं, वहीं मैं यह विश्वास नहीं करता कि उसने हम में से किसी को भी अद्‌भुत कार्य करने वाला बनाया है । जैसे कि देहातों के उपदेशक कहते हैं । ''यह कोई अन्य ही पूर्ण विषय है ।'' हम पूर्ण रूप से आज के

समय में इस का उत्तर नहीं दे सकते, जैसे भी हो हम उस उठे हुए दुविधा का उत्तर दें जो यीशु के थे कहने पर हुआ - ''तुम इनसे भी बढ़कर काम करोगे जो मैंने किया ।''

अब यह चिन्ताजनक बात है । क्या सृष्टि के सृष्टिकर्ता से अधिक शक्तिशाली होना सम्भव हो सकता है ? क्या हम यीशु से बढ़कर कार्य कर सकते हैं ? तो उत्तर है ''हाँ'' । उसने ऐसा ही कहा है इस वचन में । तो फिर प्रश्न ऐसा बन जाता है, उसका ''बढ़कर'' कहने का क्या अर्थ होगा ? यह कुँजी है । मेरा विश्वास है कि शब्द ''बढ़कर'' का अर्थ अधिक शक्तिशाली या अधिक आश्चर्य जनक को सूचित नहीं करता । मेरा विश्वास है वह दो चीजों को सूचित करता है ।

हमारे कार्य अपने में महान हैं ।

मुझे उदाहरण देने दें । उस कोढ़ी की त्वचा, जिसे यीशु ने चंगा किया था फिर से आयु के साथ झुर्रिदार हो जाएगी । लेकिन यदि तुम, फिलिप्प यान्से , की तरह एक कोढ़ी को यीशु में उद्धार की ओर चलाओगे, वह कोढ़ी एक नए शरीर के साथ एक दिन स्वर्ग मे ंजी रहा होगा । लाज़र को एक बार फिर मरना होगा लेकिन जब तुम एक अविश्वासी को यीशु के विश्वास में लाओगे, भले ही तुमने उसे मृतकों में से न जिलाया होगा, वह स्वर्ग में अनन्त काल तक जीवित रहेगा ।

हमारे कार्य विशालता में भी महान होंगे ।

यदि आप यीशु की सेविकाई का अध्ययन करेंगें, तो आप जानेंगें कि उनकी सेविकाई अद्‌भुत रीति से छोटी थी । उन्होंने उत्तर से लेकर दक्षिण तक लग भग सौ मील की यात्रा, की और लगभग चालीस मील पूरब से लेकर पश्चिम तक । उसने फलिस्तिन के बाहर कभी उपदेश नहीं दिया । यूरोप य चीन जैसे दूर देशों ने कभी उसका नाम नहीं सुना । सेवा के अन्त में उनके पास जिन्होंने उनपर विश्वास किया, मुठ्ठी भर चेले थे ।

उसकी सेविकाई इतनी सीमित थी कि एक प्रसिद्ध संशयवादी डेविड डयूम ने एक बार कहा - यह परमेश्वर के लिए अनौतिकता है कि, इस बात की आशा करो कि जो विश्व के छोटे से क्षेत्र तक ही सीमित है उस पर सम्पूर्ण विश्व विश्वास करे, जो केवल अल्प काल तक था और केवल एक ही संस्कृति का था । जैसे भी हो, हम जानते हैं कि, यीशु एक चट्‌टान था.। जिसे मानव इतिहास के सरोवर में डाला गया था, और लहरें रह किनारे तब पहुँच रही हैं ।

आज हमारे कार्य क्या व्याप्ति में भी महान हैं ? ओह । हाँ । करोडो विश्वासी केवल चीन में ही बसते हैं । वास्तव में आज बाइबल किसी भी अन्य पुस्तक से अधिक भाषाओं में प्राप्त है ।

आज हँ गेरी की हमारी कलीसिया में एक सदस्य हैं, जो हमारे द्वारा सहायता पाने वाले सेवकों के साथ काम कह रहे हैं । हमारी कलीसिया सेवा में लीन है या हमारे विश्वव्यापी कर्मचारी गण के साथ विश्व भर में फैल गई है । उनमें कुछ क्षेत्र हैं ।

- नगानो के, जापान
- इण्डियन रिजर्वेशन, केनाडा
- रेडियो लिसनर्स, स्लोवाकिया
- सेन साल्वेडार, एल. साल्वेडार और
- फ्रेन्च सार्वेसमेन टौलोन, फ्राँस

यीशु ने कहा, तुम उस कार्य विधि के भागीदार होगे, जो अपने प्रकार और विशालता में, कही उससे कहीं अधिक होगी जो में तीन वर्षों में कर सका । और वह सच कह रहा था ।

इस वचन के अन्तिम भाग को अनदेखा न करो ''.... क्यों कि मैं अपने पिता के पास (वापस) जाता हूँ ।''

आप और मैं अधिक बडे काम कर सकते हैं । अपने बडे विश्वास के कारण नहीं, बल्कि उसकी हमारे पक्ष में की जाने वाली निष ठावान मध्यस्त प्रार्थनाओं के कारण । और यह हमें प्रार्थनाओं को लेकर एक स्पष्टतर वाया से परिचय करवाता है । यूहन्ना के अध्याय १४ वचन १३ को देखें ।

'' जो कुछ तुम मेरे नाम से माँगोगे, वही मैं करूँगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो ।

यदि तुम मुझसे मेरे नाम से कुछ माँगोगे, तो मैं उसे करूँगा ।''

यहाँ एक और प्रश्न उठता है ।

प्रश्न ३ - क्या यीशु कुछ भी देगा, यदि हम विश्वास में माँगे? भरोसा करते हुए ?

अध्याय १६ वचन २३ और २४ पर ध्यान दें ।

" और उस दिन तुम मुझसे कुछ न माँगोगे । मैं तूम से सच सच कहता हूं, यदि पिता से

कुछ माँगोगे, तो वह मेरे नाम से तुम्हे देगा । अब तक तुम ने मेरे नाम से कुछ नहीं माँगा ,

माँगो तो पाओगे ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए ।"

मैं चाहूँगा कि आप पहले ध्यान दे कि यीशु अपने पिता के साथ अपनी एकता और अपने ईश्वरत्व को एक परिष्कृत पर निश्चित अभिव्यक्ति की तरह, अपने आपको पिता से बदल लेता है ।

एक बार फिर आयत १४ वचन १३ पर ध्यान दें ।

जो कुछ तुम मेरे नाम से माँगोगे वही मैं करुँगा ।

अब एक बार फिर अध्याय १६ वचन २३ को देखें ।

..... यदि तुम पिता से कुछ माँगोगे, तो वह मरे नाम से तुम्हें देगा ।

अब वापस उसी प्रश्न पर, "क्या यीशु हम जो कुछ माँगे हमें देगा ?

आपने दो रूकावटें या योग्यताओं पर ध्यान दिया होगा ।

पहली योग्यता है हमें यीशु के नाम में प्रार्थना करनी होगी ।

इसका अर्थ क्या है ? हम कुछ देर बाद इस विषय में अधिक बात करेंगे । लेकिन अब के लिए, यीशु हमसे ऐसी बात कह रहे हैं, जो हमें केवल अपनी प्रार्थना को "यीशु के नाम पर आमीन" जैसे शब्दों से सम्पन्न करने की प्रेरणा देने से कहीं अधिक गहरी है । यह निश्च यही, धर्म ग्रन्ध के प्रार्थना की विधि है, और उसे हमें इस सत्य को लेकर उत्तरदायी बनाना है । कि हम यीशु के अधिकार से ही परमेश्वर के पास जाते हैं, और जो हम प्रार्थना कर रहे हैं वह वही है जिसे अन्ततोगत्वा यीशु अपना नाम देना चाहेगा ।

यीशु के नाम में प्रार्थना करना उस तरह है जैसे अपनी प्रार्थना पर यीशु का मुहर लगाना । यह चेलों के लिए एक नया विचार है - एक नया सिद्धान्त नहीं । यीशु ने कहा - "प्रार्थना इस तरह कीजिए कि जब आप समाप्त करें तो मेरा नाम उसके साथ जोड़ सकें, जैसे कि उसे मैंने ही कहा हो, यह जानते हुए कि जो कुछ तुम प्रार्थना कर रहे हो उसे मैं पूर्ण हृदय से सहमत होऊँगा ।

- दूसरी योग्यता यह है कि हम प्रभु की महिमा का अनुकरण करें ।

अध्याय १४ वचन १३ फिर से देखें ।

" जो कुछ तुम मेरे नाम से माँगोगे, वही मैं करूँगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो ।" प्रार्थना का मुख्य उद्देश हमें कठिनाइयों से बाहर निकलना या जीवन की पीडाओं में ले कर चलना है । परमेश्वर इन समस्याओं में रुचि रखते हैं और हमारे जीवन के हर क्षेत्र में हमसे वार्तालाप करने में गहरी रुचि रखता है । लेकिन उसका प्राथमिक उदेदश हमारी त्वरित आवश्यकता से परे जाता है । प्रार्थना जो उसकी महिमा को ढूंढती है वही प्राथमिक महत्व रखता है ।

हमारी प्रार्थना प्रभु को एक जिन्न की तरह व्यवाहरित करती है । हम प्रार्थना के चिराग को रगड़ते हैं और वह प्रकट होता है, यह पूछते हुए, "हाँ मालिक, आप क्या चाहते हैं । " जब हमारी बडी बेटी, छोटी सी थी वह रंग भरना सीख रही थी , उसने वही किया जो सभी छोटे बच्चे करते हैं । उनकी दो समस्याएँ हैं - सही रंग चुनना, और रेखाओं के बीच रहना पिता की सन्तान होने के नाते हमारी प्रार्थना भी उसी तरह सीखते हैं, किसे चुना है, यीशु के नाम में, और प्रभु की महिमा के लिए प्रार्थना सही चित्र है ।

प्रश्न ४ : हम कैसे जानेंगे कि हम यीशु के नाम में प्रार्थना कर रहे हैं ?

४. प्रश्न संख्या ४ है, हम कैसे जानेंगे कि हम यीशु के नाम में प्रार्थना कर रहे हैं या नहीं ? अध्याय १३ में यीशु एक नितान्त नयी सच्चाई को चलो को प्रकट करतै हैं । याद करे मत्ती अध्याय ६, यीशु ने चेलों को "पिता" जो स्वर्ग में है उसके लिए प्रार्थना करना सिखाया था । अब इस वचन में, वे प्रकट करते हैं कि उनकी प्रार्थनाएँ उत्तर पाएँगी जब उसके नाम में माँगी जाएँ या यूनानी भाषा में "ओनोम" ।

अब पूछने के लिए प्रश्न है, "हम कैसे जानें कि हम सच में यीशु के "नाम " में प्रार्थना कर रहे हैं ?

बारह प्रश्नों में अगले आठ प्रश्न, इस प्रश्न के उत्तर को सम्बोधित करती हैं ।

प्रश्न ५ : क्या हम प्रार्थना करने के लिए योग्य हैं ?

५. प्रश्न सं ५ यह है, क्या हम प्रार्थना करने के लिए योग्य भी हैं ?

अविश्वासी प्रार्थना के योग्य नहीं । यूहन्ना आयत ९ वचन ३१ को पलट कर देखें ।

हम जानते हैं कि परमेश्वर पापियों को नहीं सुनता, परन्तु यदि कोई परमेश्वर का भक्त हो

और उसकी इच्छा पर चलता है, तो वह उसकी सुनता है ।

दाऊद ने भजन संहिता ३४ के वचन १५ और १७ अ में लिखा है,

'' यहोवा की आँखें धर्मियों पर लगी रहती हैं और उसके कान भी उनकी दुहाई की

ओर लगे रहते हैं । ..... धर्मी दोहाई देते हैं और यहोवा सुनता है .....''

मेरा विश्वास है कि जो पहली प्रार्थना परमेश्वर सुनता है वह है उद्धार की प्रार्थना । तब तक आप केवल हवा से बातें कर रहे होते हो । प्रभु तुम्हारे पश्चाताप की प्रार्थना सुनना चाहता है । यदि तुमने अपने जीवन में ''मसीही'' नाम का दावा नहीं किया तब तक ख्रीष्ट के नाम का दावा भी अपनी प्रार्थना में नहीं कर सकते ।

आप पूछ सकते हैं, ''क्या यह न्याय संगत है ?''

ठीक, बाइबल भी यही कहता है, केवल अविश्वासी ही प्रार्थना के लिए अयाग्य ना ठहराये गए बल्कि एक प्रभावोत्पादक प्रार्थना किन्तु अनाज्ञाकारी विश्वासी भी अयाग्य नाही है ।

दाऊद ने भजन संहिता अध्याय ६६, वचन १८ में लिखा है,

यदि मैं मन में अनर्थ की बात सोचता, तो प्रभु मेरी न सुनता ।

यदि मै सोचता .....

(सँजोने और बचाव के लिए अर्थ)

चक स्विनडल ने अपने पर बीति एक मज़ेदार कहानी सुनाथी जब वे एक शाम अस्पताल गये थे । वे एक लम्बे से हॉल से होक गुज़र रहे थे एक स्त्री से मिलने, कि आधे रास्ते में उसने उस स्त्री के पति को धूम्रपान करते हुए खडे देखा । जब उसकी नजर अपनी ओर आते स्विनडल पर पडी, वह वहीं चाहता था कि पास्टर जी उसे स्पष्ट रूप से सिगरेट पीते हुए देखे, इसलिए उसने जलती हुई सिगरेट वाले हाथ को अपने पतलून के आगे वाले जेब में डाल ली । स्विनडल ने तय कर लिया कि वे उससे कुछ देर बातचीत करेंगें । वह आदमी लाल पड गया, बैचैन हुआ और धुआँ उसकी जेब से निकलने लगा । अन्त में चक हँस पडे और कहा, ''सुनो तुम क्यों नहीं आगे जाकर उसे खतम करे देते ? ''

''क्या खतम करूँ ''

और वह धुएँ के बादल में तेजी से बढ़ गया ।

इतने मूर्ख भी न बनें कि कुछ दहकती हुई अवज्ञा को छुपाते हुए प्रभु के सम्मुख जाकर उनसे वार्तालाप की कोशिश करना ।

प्रश्न ६: क्या हम पवित्र उद्देश से प्रार्थना कर रहे हैं ?

६ प्रश्न सं ६ है कि - क्या हम पवित्र उद्देशों से प्रार्थना कर रहे हैं ?

आपके प्रार्थना की परीक्षा हैं कि क्या यीशु आपके प्रार्थना की ग्रहन करेंगे ? यीशु के नाम में प्रार्थना करना है कि प्रार्थना करो और, यीशु से कहें कि वे अपने नाम की मुहर लगा दें । तो क्या वे इसकी प्रार्थना करेंगें ? भगवान रजनीश अपने कीमती कारों के समूह के कारण निन्दित हुए थे । न्युयार्क पत्रिका में वे ये कहते हुए अवहत हुए कि ''तुम अमरीकी यदि ईश्वर के आमने सामने पड जाएँ, आप लोग शेवर्ले की माँग करोगे ।

यीशु ने कलीसिया को उनकी प्रार्थना के गलत उपयोग को लेकर प्रबोधित किया । संकेत किया कि यही वह कारण है जि सके लिए उनकी प्रार्थनाएँ प्रत्युत्रर नहीं पातीं । देखें याकूब की पत्री अध्याय ४ वचन ३.

'' तुम माँगते हो पर पाते नहीं, इसलिए कि बुरी इच्छा से माँगते हो,''

ताकि अपने भोग - विलास में उड़ा दो ।

शब्द Pleasure (भोग विलास) यूनानी शब्द से अनूवादित हुआ है जिसका अंग्रेजी अर्थ है हेडोनिज़म (सुखवाद) या सुखों को खोजना है ।

प्रश्न ७ : क्या हम परमेश्वर की समय सारणी को हमारे साथ मिलाने की माँग कर रहे हैं ?

७. प्रश्न सं ७ यह है, क्या हम परमेश्वर की समय सारणी को हमारे साथ मिलाने की माँग कर रहे हैं ? हम क्यों जल्दी में हैं ? क्यों कि हमारे उत्तर प्राप्त प्रार्थनाएँ जिन्दगी को सरल बना देंगी । इसलिए हमारी प्रार्थनाएँ अधिकांश में हमारे आरामपूर्ण जीवन पर केन्द्रित होती हैं । ''हे प्रभु, ऐसा जो कुछ जो जीवन को दूभर बना सकता है, उससे मेंरी रक्षा कीजिए - और तुरन्त । ''

क्या ये वह प्रार्थना है, जो यीशु करेंगे ? यह रोचक विषय है कि यीशु ने बगीचे में प्रार्थना की और वे अपनी प्रार्थना में इतने गम्भीर थे कि उनकी त्वचा के नीचे के रक्त कण फट पडे और स्वेद के साथ छिद्रों से रक्त रिसने लगा, अपने लिए प्रार्थना ऐसा साधन था, जो उन्होंने अपने कार्य सिद्धी के लिए शक्ति इकठ्ठा करने के लिए प्रयोग किया, प्रार्थना उन्हे उनमें से छुडाने का साधन नहीं था । अन्य शब्दों में प्रार्थना सदा दुःख का विकल्प नहीं, कई बार उसके लिए हमें तैयार करता है ।

प्रश्न ८ : क्या हम प्रभु से अपने सम्बन्ध से अधिक प्रभु से अपनी याचनाएँ करने के लिए चिन्तित हैं ?

प्रश्न - सं- ८ - यह है कि - क्या हम प्रभु से अपने सम्बन्ध से अधिक अपने प्रभु से अपनी याचनाएँ करने के लिए चिन्तित हैं?

जार्ज मैकडोनाल्ड ने ऐसा कहा,

क्या यदि प्रभु चाहें कि प्रार्थना हमारे लिये वह वस्तु हो जो प्राथमिक और अतिआवश्यक है ? क्युकी यदि प्रभु की सोच में प्रार्थना का मुख्य उद्देश यह हो कि हमारे बडी और अनन्त आवश्यकताओं को पूरी करना - स्वयं उनको पाने की आवश्यकता है ।

भूख घर से भागे बच्चे को घर ला सकता है, चाहे तुरन्त खिलाया जाए या नहीं, लेकिन उसे अपने भोजन से अधिक अपने माता की आवश्यकता होती है । प्रभु से वार्तालाप प्राणों की ऐसी आवश्यकता है जो बाकी हर किसी से ऊपर है ।

प्रश्न -९ क्या हम यह आशा करते हैं कि प्रभु हमारी यौजनओं के प्रति उसकी तरह प्रतिक्रिया करें जैसा हम चाहते हैं ?

प्रश्न सं ९ : क्या हम यह आशा करते हैं कि प्रभु हमारी याचनाओं के प्रति उसी तरह प्रतिक्रिया करें पैसा हम चाहते हैं ? अन्य शब्दों में, क्या तुम विश्वास करते हो कि तुम पहले ही जानते हो कि क्या सबसे उत्तम है और प्रार्थना तो केवल प्रभु की सम्मति का मुहर लगवाने का जरिया है ?

वर्नन जानज़ेन ने एक रविवार के प्रातः काल की आराधना में बैठने की एक कहानी सुनायी । एक छोटा बच्चा प्रातःकाल की आराधना समय से बचने का नाटक कर रहा था । एक नियमित अनुशासन बनाये रखने के लिए माता पिता ने काफी कोशिश की । अन्त में पिता ने बच्चे को उठा लिया और स्थिरता से गलियारे में चलने लगे बच्चा संकट में पड़ गया, जैसे ही वे लोग कक्ष के द्वार तक पहुँच गये बच्चे ने जोर से भक्त मण्डली को आवाज दी, ''मेरे लिये प्रार्थना करें, मेरे लिए प्रार्थना करें ।''

वह एक आत्मिक बालक है । वास्तव में नहीं । सत्य ये है कि उसकी प्रार्थनाएँ सुन ली जाएँ, उसने सिर्फ इसी पक्ष की आशा की । हमारे वि य में क्या ?

प्रश्न - १०: क्या हम इस बात में अधिक रुचि रखते हैं कि प्रभु हमें क्या देगा बजाय इसके कि प्रभु हममें क्या करेंगें ?

१० प्रश्न सं १० है - क्या हम इस बात में अधिक रुचि रखते हैं कि प्रभु हमें क्या देगा बजाय इसके कि प्रभु हम में क्या करेंगें ?

एक सदी से भी पहले, एक महान उपदेशक फिलिप्प ब्रूक्स ने कहा, आसान जीवन के लिए प्रार्थना मत करो, शक्तिवान बनने के लिए प्रार्थना करो, अपने सामर्थ के बराबर कार्य की प्रार्थना मत करो, अपने नियत कार्य के बराबर सामर्थ के लिए प्रार्थना करो । फिर तुम्हारा कार्य किया जाना ही अद्भुत नहीं होगा बल्कि तुम स्वयं अद्भुत बन आ जाओगे ।

यीशु ने कभी अपने चेलों को उपदेश देना नहीं सिखाया बल्कि, उसने उन्हें कैसी प्रार्थना की जाए सिखाया । उस प्रार्थना को मेरे साथ कहें ।

'' हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है, तेरा नाम पवित्र माना जाए । तेरा राज्य आए । तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो ।''

रुक जाएँ, में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो ।

एक जायँ, वह कहता है ..... ''तेरा राज्य आए । तेरी इच्छा पूरी हो .....

मुझे और आपको प्रार्थना करना है, हमारी इच्छा स्वर्ग में पूरी होने के लिए नहीं बल्कि प्रभु की इच्छा पृथ्वी पर पूरी होने के लिए । फिर प्रार्थना, हमारी इच्छा को प्रभु की इच्छा से जोड़ना है, ना कि उसकी इच्छा को हमारी इच्छा से ।

मैं अक्सर एक खेने वाली नाव पर अपने को देखता हूँ, मेरे पास पतवार नहीं लेकिन, मेरे पास एक लंगर है, रस्सी से बन्धी हुई । मैं अपनी पूरी शक्ति से, लंगर को किनारे फेंकता हूँ और रवीचने लगता हूँ । अन्त में मैं सुरक्षित हूँ । अब, क्या मैं किनारे करे अपनी ओर खींच रहा था ?

यीशु के नाम में प्रार्थना अपनी इच्छा को सर्वशक्तिमान प्रभु की इच्छा पर डालकर खींचना है ।

प्रश्न ११- क्या हम सच में आशा करते हैं, परमेश्वर का सुना जाना, यीशु का प्रार्थना किया जाना, और उत्तर का आना ?

प्रश्न सं ११- क्या हम सच में आशा करते हैं , प्रभु का हमारी प्रार्थना सुनना ? यीशु का विनती करना, और उत्तर का आना ?

जब हम प्रार्थना करते हैं, तब क्या हम सच में आशा करते हैं कि प्रभु उसका अनुसरण करेंगे ? क्या तुम कहते हो, ''प्रभु मुझे नेत्र दें कि मैं आपकी इच्छा को पूरा हुआ देखें ?

मुझे लगता है हम बहुत कुछ हेलेन हेस की जीवनी के पिता और पुत्र के समान है । उस अभिनेत्री ने अपने धन्यवाद अर्पण दिवस की कहानी सुनायी । वह पहली बार अपने परिवार के लिए टर्की भोजन बना रही थी, परोसने से पहले अपने पति चार्लस् और पुत्र जेम्स से घो णा की कि, ''यह मैंने पहली बार टर्की भोजन बनाया है । यदि यह अच्छा नहीं बना है, मैं नहीं चाहती कि कोई एक शब्द भी कहे । हम लोग बस मेज पर से बिना कुछ कहे उठ जाएँगें और बाहर रेस्ट्राँ में खाने चले जाएँगें ।'' फिर वह वापस रसोई घर में चली गई । जब वह उस टर्की पकवान को पात्र में रख कर खाने भोजनालय में आई, तो उसने अपने पति और पुत्र को कोट पहने और हैट लाए मेज पर तैयार बैठे देखा ।

वे लोग ज्यादा कुछ की आशा नहीं कर रहे थे ।

हम प्रभु के पास ऐसे ही जाते हैं - अपने कोट और हैट पहने । ये ऐसा ही कहना है जैसे, ''सच्चे मसीही प्रार्थना करते हैं । ''लेकिन मैं समय के साथ ज्यादा कुछ आशा नहीं करता । जब ऐसा है तो हम यीशु के नाम में और प्रभु की महिमा के प्रकट होने के लिए प्रार्थना नहीं कर रहे है ।

मुझे विश्वास करना पड़ा कि बच्चों का विश्वास हम चेलों के लिए एक शक्तिशाली पाठ की तरह है । बच्चों की प्रार्थनाएँ हमें दोषी ठहराती हैं । वे प्रार्थना करते हैं यह मान कर कि प्रभु सुन रहा है ।

हाल ही में हमाने १७ माँताओं और पिताओं को प्रभु को समार्पित किया था उनके छोटे बच्चों के साथ । एक परिवार मे एक बच्चे को गोद लिया था और उन्होंने बताया कि किस तरह वह छोटा बच्चा उनकी अपनी बेटी की प्रार्थना का उत्तर था । इस बात ने मुझे उस छोटे बच्चे का स्मरण दिलाया जिसने अपने माता-पिता से बार-बार कहा कि वह एक छोटा भाई चाहता है । उसे इस बात की खबर नहीं थी कि उसकी माँ उस समय दो माह की गर्भवती थी । तो, पिता ने निर्णय किया कि उसके बेटे के विश्वास को दृढ करने के लिए कि प्रार्थनाएँ पूरी होती हैं, वह अपने बेटे को खींच कर एक तरफ ले गया और कहा, ''सुनो बेटा, यदि तुम सात महीनों तक (और उसने समझाया कि कितना लम्बा समय है) प्रार्थना करोंगे तो मैं मानता हूँ कि प्रभु तुम्हारी प्रार्थनाओं को सुन लेगा ।

उस रात वह छोटा बालक अपने शयन कक्ष जल्दी ही गया छोटे भाई के लिए प्रार्थना करने । सात महीनों बाद उसकी माँ अस्पताल से वापस आई, उसने और पिता ने अपने बेटे को बैठक में बुलाया । पिता ने चादर खींचा और वहाँ एक नन्हा भाई नहीं दो नन्हे भाई थे जुडवा । पिता ने अपने पुत्र के कंधे पर हाथ रखकर कहा, ''अब क्या तुम खुश नहीं हो कि तुमने प्रार्थना की ?'' छोटे बच्चे ने कुछ हिचकिचाया कर कहा, ''हाँ क्या आप खुश नहीं कि मैंने जब किया तब छोड़ दिया था ?

क्या हम यह मान कर प्रार्थना करते है कि प्रभु सुन रहा है ।

प्रश्न १२ - क्या हम हमारे अपने प्रार्थनाओं के उत्तर बनना चाहते हैं ?

प्रश्न सं १२ है, क्या हम हमारे अपने प्रार्थनाओं के उत्तर बनना चाहते हैं ?

आप प्रार्थना कर सकते हैं ,

- प्रभु जरुरतमंदों को दें ..... शायद वह चाहता है कि आप एक थैला राशन खरीदे ।

- प्रभु संतो को प्रेरित करें ..... शायद वह चाहता है कि आप एक पत्र लिखें ।

- प्रभु - विदेशी सेवकों की सहायता करें .....शायद वह चाहता है कि आप स्वयं उनमें से एक हों ।

प्रार्थना का महा उत्साहवर्धक बात यह है नहीं कि प्रार्थना का उत्तर पाएँ बल्कि स्वयं उत्तर बन जाना है ।

समापन

ठीक । यीशु चेलों व्याकुल हृदयों को चंगा करना चाहते थे - इसलिए उनसे और हमसे स्वर्ग में अपने भावी निवास के विषय में बताया । फिर उसने, उनसे और हमसे प्रर्थना में वर्तमान सौभाग्य के बारे मे बताया - उसे कैसे करना है, उसका अर्थ क्या है । जि न्दगी जैसे जैसे बढ़ती है निस्संदेह कई बातें आएँगी, दुःख और कठिनायाँ आएँगी, जिनसे हम पीडित होंगे । हम बीमार पडेंगें । मित्र बीमार होकर गुज़र जायेंगें । हमारे घर में, कार्यक्षेत्र में और अन्य क्षेत्रों में निराशाएँ आएँगी । ऐसी परिस्थितियों में आप और मैं कैसी प्रतिक्रियाऐं दिखाएँगें ? क्या हम शिकायत करेंगें और परमेश्वर को दोष देगें ? या फिर हम यीशु के नाम में और उसकी महिमा के लिए प्रार्थना करते रहेंगें ? यदि हम अगले को चुनेंगें, यीशु ने कहा कि हमारा आनन्द सम्पूर्ण होगा ।

मैं इल सब को एक अन्तिम विचार से गाँठ बाँधना चाहता हूँ । प्रकाश की एक किरण १८६,००० मील प्रति सेकण्ड के वेग से चलती है । तो एक प्रकाश पुजं धरती से चाँद तक डेढ़ सेकण्ड में पहुँचेगा । बुध ग्रह पर साढ़े चार मिनट में, बृहस्पति पर पैंतीस मिनट में, शनि पर आधे घण्टे में । यदि तुम अपने आकाश गंगा के किनारे चलो तो तुमको एक लाख वर्ष लगेंगें । यदि तुम तारों की गिनती करोगे तो सौ करोड से भी अधिक होंगें ।

उस परमेश्वर ने इन सबकी सृष्टि की, अपने वचन की शक्ति से, वह चाहता है कि आप उसके निकट जाएँ और प्रार्थना करें उससे बातें करें - अपने हृदय से उससे कहें, अपनी समस्याएँ, अपने सपने, और जब आप यीशु के नाम में उसके पास आओगे, यीशु के जैसा बनने की चाह लेकर, और ऐसा जीवन जिएँ जो उसे प्रसन्न करें, तो आप कभी उसकी उपस्थिति से खाली हाथ नहीं जाओगे ?

हड़सन टेलर ने कहा,

मैं परमेश्वर से अपनी सहायता करने के लिए चहता था । फिर मैंने उससे प्रार्थना की, क्या मैं उसकी सहायता कर सकता हूँ । और फिर यह याचना करते हुए कि वे अपने कार्य मुझमें और मेरे द्वारा करें मैंने समापन किया ।

वह है यीशु के नाम में प्रार्थना करना । और वह आपके व्याकुल हृदय में चंगाई लाएगा ।